30 / 01 / 75 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

सेकेण्ड में व्यक्त से अव्यक्त होने की स्पीड का अनुभव करना

➢➢ सर्वशक्तिमान बाप का आह्वान और मंगल मिलन

➳ _ ➳ भृकुटि के अकाल तख्त पर विराजमान मैं आत्मा एक चैतन्य शक्ति हूं

→ देह के भान से परे संसार की आवाज और आकर्षण से परे इस स्थूल शरीर को छोड सूक्ष्म शरीर धारण कर मैं फरिश्ता चाँद तारागण से दूर आकाश मे उड़ता जा रहा हूं

→ मैं अव्यक्त फरिश्ता अव्यक्त बापदादा की पुकार को सुन रहा हूं

→ बापदादा बाँहों पसारे इंतजार मे खडे है

→ मैं फरिश्ता लाइट के कार्ब में हूं

→ और मैं फरिश्ता पहुंच गया शांति वन के डायमण्ड हाल में

→ सब फरिश्ते ही फ़रिश्ते वाह कितना अद्भुत नजारा है

→ चहुं ओर असीम शांति ही शांति

→ सब एक की ही याद मे मगन एक ही लगन

→ सब का एक ही दृढ संकल्प और सर्वशक्तिवान बाप का आह्वान कर रहे है

■ मैं फरिश्ता अपनी याद और स्नेह के बल से अव्यक्त को व्यक्त मे ला मंगल मिलन मना रही हूं

→ बाप से निरंतर आती अनन्त गुणों शक्तियों को अपने मे समाती बाप समान बनती जा रही हूं

➳ _ ➳ मैं अव्यक्त फरिश्ता हूं

→ मैं अभी साकारी अभी अभी आकारी अभी अभी निराकारी बन तीनो लोको की सैर कर रही हूं

→ व्यक्त मे रहते सम्पूर्ण समर्पण भाव रख एक सेकेण्ड में अव्यक्त फरिश्ता की स्थिति का अनुभव करती हूं

■ जैसे परियां जादू से जिस शक्ति का आह्वान करे वो शक्ति ला सकती है

→ ऐसे ही जादुई गोल्डन चाबी मेरा बाबा को सदा साथ रख मैं आत्मा जिस समय जो शक्ति चाहिए उसका आह्वान करती हूं

➳ _ ➳ मैं आत्मा मास्टर सर्वशक्तिमान हूं

→ हजार भुजाओ वाला स्वयं सर्वशक्तिमान बाप मुझ आत्मा के साथ है

→ शक्तियों की सम्पन्न होकर मैं फरिश्ता जिस समय जिस शक्ति की जरूरत है उस शक्ति का आह्वान कर उसे यूज कर रही हूं

- सर्वशक्तिमान की शक्तिशाली याद से व एक से जिगरी प्यार होने से मैं आत्मा एक सेकेण्ड मे व्यक्त से अव्यक्त होने का अनुभव कर रही हूं